

## डॉ. रॉबर्ट वानॉय , किंग्स, व्याख्यान 2

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वानॉय , डॉ. पेरी फिलिप्स और टेड हिल्लेब्रांट

आज के लिए मैंने जो टिप्पणी पढ़ने के लिए सूचीबद्ध किया है, उसके अलावा, मेरे पास जे. बार्टन पायने द्वारा *बाइबिल के ज़ोंडरवन पिक्टोरियल इनसाइक्लोपीडिया में कालक्रम पर वह लेख है।* इसे निर्दिष्ट करने का मेरा उद्देश्य यह नहीं है कि आप विस्तार से विस्तार से काम करें - यह बहुत ही जटिल सामग्री है - बल्कि मेरा उद्देश्य आपको उन सिद्धांतों के प्रकार के बारे में कुछ जानकारी देना है जिन्हें इन कालानुक्रमिक डेटा पर लागू किया जा सकता है ताकि कुछ समस्याओं का समाधान किया जा सके। स्पष्ट समस्याओं के बारे में, विशेष रूप से वह खंड जहां वह परिग्रहण-वर्ष डेटिंग या गैर-परिग्रहण वर्ष डेटिंग, और सह-शासन के बारे में बात करता है जब वर्ष शुरू होता है चाहे वह वसंत की शुरुआत हो या पतझड़ की शुरुआत हो। इस प्रकार की चीजें अधिकांश कालानुक्रमिक समस्याओं को हल करने की दिशा में काफी आगे बढ़ चुकी हैं।

दूसरी बात जो मैं चाहूंगा कि आप कम से कम यह अंदाजा लगा लें कि आप पूर्ण तिथियों पर कैसे पहुंचते हैं। यदि आपको याद हो तो उस लेख के शुरुआती भाग में पायने ने कहा था कि बेबीलोनियाई, असीरियन और मिस्र के कालक्रम के साथ कुछ ऐसे बिंदु हैं जहां असीरियन अभिलेखों में जो कुछ घटित होता है उसे बाइबिल की सामग्री में घटित होने वाली किसी चीज़ से जोड़ा जा सकता है। यह एक निश्चित बिंदु देता है क्योंकि वे बेबीलोनियन और असीरियन रिकॉर्ड की तुलना कर सकते हैं और पूरी तरह से निश्चित हैं कि उनके पास जो तारीखें हैं वे सटीक हैं क्योंकि असीरियन रिकॉर्ड पुराने हैं और सौर ग्रहणों में बंधे हैं। सूर्य ग्रहण से आप वर्षों का पता लगा सकते हैं।

तो आप बाइबिल के कालक्रम में किसी दिए गए बिंदु पर एक निश्चित तारीख प्राप्त कर सकते हैं, उदाहरण के लिए, 841 ईसा पूर्व जब येहू शल्मनेसर III को श्रद्धांजलि देता है। इसका उल्लेख असीरियन अभिलेख में मिलता है। इसका उल्लेख बाइबिल अभिलेख में भी है। जब आपको उस जैसा एक निश्चित बिंदु मिल जाता है, तो आप उससे आगे और पीछे

काम कर सकते हैं। चूँकि आपके पास समकालिक शासन है, आप येहू के समय से पहले काम कर सकते हैं या आप येहू के समय से आगे बढ़ सकते हैं, और उन निश्चित बिंदुओं के सापेक्ष आप इज़राइल के लिए कालक्रम स्थापित कर सकते हैं। दूसरा 853 ईसा पूर्व में करकर की लड़ाई और उसमें अहाब की भागीदारी है। यह एक और निश्चित बिंदु देता है।

इन उदाहरणों में मेरा उद्देश्य आपको कालक्रम के कुछ बुनियादी विचार प्रदान करना था। यदि आप इनमें से कुछ समस्याओं की जटिलता के विवरण में महारत हासिल करना चाहते हैं तो आप अपने जीवन का एक अच्छा हिस्सा बिता सकते हैं।

ठीक है, मैं यहां से जो करना चाहता हूँ वह 1 और 2 राजाओं की रूपरेखा लेना है और पाठ के साथ ही काम करना शुरू करना है। मुझे यकीन नहीं है कि यह कब तक चलेगा लेकिन मैं सोलोमन के तहत यूनाइटेड किंगडम पर कुछ विस्तार से जोर देने जा रहा हूँ, जो कि रोमन अंक I है। मुझे लगता है कि उस खंड में ऐसी चीजें हैं जिन पर ध्यान दिया जा सकता है और सिद्धांत रूप में यह वास्तव में है 1 और 2 किंग्स की शेष सामग्री के अधिकांश भाग पर लागू करें। मुझे लगता है कि सोलोमन पर सामग्री का विशेष महत्व है। वास्तव में, मैं शायद किसी भी अन्य खंड की तुलना में सुलैमान पर और फिर एलिय्याह और अहाब पर अधिक समय बिताऊंगा। "ए" "परिचयात्मक सामग्री" है। यह आपके 1 राजाओं की रूपरेखा पर है। वहां दो उप-बिंदु हैं: "1" "सिंहासन पर सुलैमान का उत्तराधिकार, 1 राजा 1:1-2:12" है। वह हमारा पहला खंड है। अब उस अनुभाग पर कुछ टिप्पणियाँ। मैं इसे पढ़ने नहीं जा रहा हूँ। आप इसे पहले ही कर चुके हैं और इस पर टिप्पणी पढ़ चुके हैं, इसलिए मुझे लगता है कि आप 1:1-2:12 की मूल सामग्री से परिचित हैं। उस खंड में मूल प्रश्न यह है कि डेविड का उत्तराधिकारी कौन होगा। यह एक प्रश्न है जो उस अनुभाग में दिखाई देता है। यह ऐसा प्रश्न है जो इस अनुभाग के लिए नया नहीं है। यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर पहले भी विचार किया जा चुका है; वास्तव में, इसे सुलैमान के जन्म से पहले ही संबोधित किया गया था। हालाँकि दाऊद के कई बेटे थे, फिर भी प्रभु ने दाऊद से कहा कि उसका एक और बेटा होगा (यह सुलैमान के जन्म से पहले की बात है) जो उसके बाद राजा बनेगा और मंदिर का निर्माण करेगा। 2 शमूएल 7, श्लोक 12, मुझे लगता है कि आप कहेंगे,

1 और 2 शमूएल की किताब का लगभग चरमोत्कर्ष है, जो वास्तव में एक किताब है। यहां प्रभु ने दाऊद के साथ अपनी वाचा स्थापित की और कहा कि उसका एक राजवंश होगा जो सदैव कायम रहेगा, लेकिन पद 12 में उस वादे के संदर्भ में वह कहता है, "जब तुम्हारे दिन पूरे हो जाएंगे और तुम अपने पुरखाओं के साथ विश्राम करोगे, तब मैं तुम्हें खड़ा करूंगा।" तेरे उत्तराधिकारी के रूप में तेरा वंश हमारे ही शरीर से उत्पन्न होगा, और मैं उसका राज्य स्थापित करूंगा। वह वही है जो मेरे नाम के लिये भवन बनाएगा, और मैं उसके राज्य की गद्दी सदैव के लिये स्थिर करूंगा। मैं उसका पिता बनूंगा और वह मेरा पुत्र होगा।" यदि आप इसकी तुलना 1 इतिहास 22:8-10 से करते हैं तो आप वहां पढ़ते हैं, "आपने बहुत खून बहाया है और कई युद्ध लड़े हैं। तुम मेरे नाम के लिये घर न बनाना, क्योंकि तुम ने मेरे साम्हने पृथ्वी पर बहुत लोहू बहाया है। परन्तु तेरे एक पुत्र होगा, जो शान्ति और विश्राम का पुरूष होगा, और मैं उसे चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम दूंगा। उसका नाम सुलैमान होगा और मैं उसके शासनकाल के दौरान इस्राएल को शांति और शांति प्रदान करूंगा। वह वही है जो मेरे नाम के लिये घर बनाएगा।" तो आप देखिए, 1 राजा 1 और 2 की घटनाओं से बहुत पहले डेविड को प्रभु की घोषणा से यह बहुत स्पष्ट हो गया था, जहां आप वास्तव में उत्तराधिकार के बिंदु पर हैं। यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया गया था कि सुलैमान को ही दाऊद का उत्तराधिकारी बनना था और वही व्यक्ति होगा जो मंदिर का निर्माण करेगा।

अब जब सुलैमान का जन्म हुआ तो उसका नाम जेदिदिया रखा गया ; वह 2 शमूएल 12:24-25 में है। यह दाऊद और बतशेबा की घटना के बाद है जिसके लिए नाथन ने अध्याय 12 में दाऊद को डांटा था। आप श्लोक 24 में पढ़ते हैं, "तब दाऊद ने अपनी पत्नी बतशेबा को सांत्वना दी, और वह उसके पास गया और उसके साथ सो गया। उसने एक पुत्र को जन्म दिया और उन्होंने उसका नाम सुलैमान रखा। प्रभु ने उससे प्रेम किया; और क्योंकि यहोवा उस से प्रेम रखता था, इसलिये उस ने नातान भविष्यद्वक्ता के द्वारा उसका नाम यदीदिया रखने को कहला भेजा । " जेदिदिया " का अर्थ है "प्रभु द्वारा प्रिय।" इसलिए सुलैमान के पास वह विशेष स्थान है जो उसे दिया गया है। उसे डेविड का उत्तराधिकारी बनना है। वह प्रभु का प्रिय है। उन्हें मंदिर बनाना है। वह डेविड के नामित उत्तराधिकारी हैं।

अब यह दिलचस्प है कि आप कह सकते हैं कि वह विशेष विशेषाधिकार सुलैमान को दिया गया है क्योंकि यह संभवतः वह नहीं है जिसकी आप अपेक्षा कर सकते हैं। सुलैमान दाऊद का पहलौठा नहीं है। आप प्राकृतिक वंश में उम्मीद कर सकते हैं कि पहलौठे को अधिकार होगा। लेकिन आपको याद है कि पवित्रशास्त्र में यह एक सामान्य प्रकार की बात है। जहां तक वादा किए गए वंश का संबंध है, यह इश्माएल नहीं बल्कि इसहाक था जिसका वादा किया गया था, या वादे की पंक्ति थी, और इश्माएल का जन्म इसहाक से पहले हुआ था। यह एसाव नहीं था जो पहलौठा था जो परमेश्वर के वादे को आगे बढ़ाएगा, बल्कि यह याकूब था। यह यिशै का सबसे बड़ा पुत्र नहीं था जिसे शमूएल ने राजा बनने के लिए अभिषिक्त किया था। स्मरण करो जब वह यिशै के घर गया और यिशै के सभी पुत्र उसके सामने आए, तो बड़े लोग आगे आए, और उन्होंने दाऊद को शमूएल के सामने लाने के बारे में भी नहीं सोचा क्योंकि उन्होंने नहीं सोचा था कि वह गिनती करेगा। फिर भी वह बिल्कुल वही था, सबसे छोटा, जिसे प्रभु ने चुना था। तो आपके पास इस तरह के कई उदाहरण हैं, और मुझे ऐसा लगता है कि ईश्वर इस बात पर ज़ोर देना चाहता है कि उसकी मुक्ति की योजना को पूरा करने के लिए मानव अधिकारों, शक्तियों या क्षमताओं को जिम्मेदार नहीं ठहराया जाना चाहिए। यह उस तरह का कुछ भी नहीं है, लेकिन यह उसका कार्य है और यह उसका संप्रभु स्वभाव है जो उसके छुटकारे के कार्य को आगे बढ़ाता है।

निःसंदेह, परमेश्वर की पसंद को हमेशा स्वीकृति नहीं मिलती; याद रखें एसाव के साथ-साथ इसहाक ने भी परमेश्वर की संप्रभु पसंद के विरुद्ध काम किया था। एसाव वह आशीर्वाद चाहता था, और इसहाक उसे देने के लिए तैयार था, लेकिन उस सारी साज़िश के बीच, आपको याद है, वह आशीर्वाद जो याकूब के लिए था वह याकूब के पास आया, भले ही इसहाक ने सोचा कि वह एसाव को दे रहा था।

मैं और राजा 1 आपकी भी ऐसी ही स्थिति है, इस अर्थ में कि प्रभु ने एक उत्तराधिकारी नियुक्त किया था, लेकिन अदोनियाह इसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। तो वास्तव में प्रश्न 1 किंग्स में, पहले कुछ अध्यायों में, यह है कि क्या डेविड के उत्तराधिकार के मामले में ईश्वर की इच्छा का पालन किया जाएगा या कुछ अन्य विचार

प्रबल होंगे। अदोनियाह दाऊद का सबसे बड़ा शेष पुत्र था, या कम से कम ऐसा प्रतीत होता है कि मामला यही है। तुम्हें याद है कि अबशालोम और अमोन मर गये थे। अमोन ने अपनी बहन तामार का अपमान किया था और इसके लिए अबशालोम ने उसे मार डाला था। बाद में अबशालोम निर्वासन में चला गया, और जब वह वापस आया तो उसने दाऊद के विरुद्ध विद्रोह भड़काया। अंततः उस विद्रोह के परिणामस्वरूप वह मारा गया। इस प्रकार अमोन और अबशालोम दोनों मर गए।

अदोनियाह अब डेविड के उत्तराधिकारी के रूप में सिंहासन पर बैठने के लिए अपना कदम उठाता है। वह निस्संदेह जानता था कि सुलैमान नामित उत्तराधिकारी था, लेकिन आपने 1 राजा 1 के श्लोक 5 में पढ़ा, "अब अदोनियाह, जिसकी मां हाग्गिथ थी, ने खुद को आगे रखा और कहा, 'मैं राजा बनूंगा।'" उसने खुद को आगे रखा। मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि वह उस स्थान से संतुष्ट नहीं था जो भगवान ने उसे दिया था, और वह अपने लिए सिंहासन हथियाना चाहता था। तो उसे क्या करना है? संक्षेप में, वह एक क्रांति की योजना बनाता है, और मुझे लगता है कि यहां आप अदोनियाह के बीच एक वास्तविक विरोधाभास देखते हैं जो खुद को आगे रखता है और फिर सिंहासन लेने के लिए इन सभी योजनाओं को अंजाम देता है। आप उनके और डेविड के बीच एक वास्तविक विरोधाभास देखते हैं, भले ही उनके पास कई अवसर थे और उन्हें सिंहासन लेने के लिए भगवान द्वारा नामित किया गया था, उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। वह इसे प्रभु के हाथ से प्राप्त करना चाहता था; वह शाऊल को मारना नहीं चाहता था। वह प्रभु के अभिषिक्त के विरुद्ध अपना हाथ नहीं उठाएगा। मुझे लगता है कि आप देखते हैं कि अदोनियाह पर एक अलग आत्मा का शासन है। वह साज़िश और गुप्त तरीकों से सिंहासन चाहता है।

आपने श्लोक 7 में पढ़ा, "अदोनियाह ने सरूयाह के पुत्र योआब और याजक एब्यातार से बातचीत की।" योआब एक सैन्य कमांडर था और निस्संदेह, एब्यातार एक पुजारी था, और उन्होंने अदोनियाह को अपना समर्थन दिया। "परन्तु सादोक याजक, यहोयादा का पुत्र बेन्याह, नातान भविष्यद्वक्ता, शिमी, रेई, और दाऊद का विशेष रक्षक अदोनियाह के साथ न गए। तब अदोनियाह ने एन रोगेल के पास ज़ोहेलेत के पत्थर पर

भेड़, मवेशी और पाले हुए बछड़ों की बलि चढ़ायी। उसने अपने सभी भाइयों, राजाओं और यहूदा के सभी लोगों को, जो शाही अधिकारी थे, आमंत्रित किया, लेकिन उसने नातान भविष्यवक्ता या अपने भाई सुलैमान के विशेष रक्षक बनायाह को आमंत्रित नहीं किया।” इसलिए अदोनियाह ने सावधानी से चुना कि वह इस योजना में किसे शामिल करने जा रहा है - ऐसे लोग जिनके बारे में उसे, किसी भी कारण से, विश्वास था कि वे उसे धोखा नहीं देंगे बल्कि उसका समर्थन करेंगे। वह स्वयं को राजा घोषित करने के लिए इन लोगों को एक साथ इकट्ठा करता है। वह पद 7 में योआब और एब्यातार की सहायता चाहता है, लेकिन वह जानबूझकर नाथन, बनायाह, या विशेष रक्षक, या उसके भाई सुलैमान को आमंत्रित नहीं करता है। लेकिन ध्यान दें कि वह अपनी क्रांति को धार्मिक मंजूरी देने के लिए एक पुजारी को आमंत्रित करता है। वह इस चीज़ को किसी धार्मिक मंजूरी से ढक देना चाहता है। इसलिए वह एब्यातार याजक को आमंत्रित करता है और (श्लोक 9) "वह भेड़, मवेशी और पाले हुए बछड़ों की बलि चढ़ाता है।" वह उस धार्मिक मंजूरी का उपयोग अपने उद्देश्यों, अपने स्वयं के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए करने का प्रयास करता है, और मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि यह भगवान के नाम को उनकी क्रांति के साथ जोड़ने के लिए आता है, भले ही यह भगवान की व्यक्त इच्छा का जानबूझकर उल्लंघन है।

उस बिंदु से अध्याय 1 में दो लोगों के बीच चार वार्तालाप शामिल हैं। पहला श्लोक 11-14 में नाथन और बतशेबा के बीच है: "तब नातान ने सुलैमान की माँ बतशेबा से पूछा, 'क्या तुमने नहीं सुना कि हाग्गीथ का पुत्र अदोनियाह हमारे स्वामी दाऊद को बताए बिना राजा बन गया है? अब, मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम अपना और अपने पुत्र सुलैमान का जीवन कैसे बचा सकते हो। राजा दाऊद के पास जाओ और उस से कहो, हे मेरे प्रभु राजा, क्या तू ने अपने दास से यह शपथ नहीं खाई, कि निश्चय तेरा पुत्र सुलैमान मेरे पीछे राजा होगा, और वह मेरी गद्दी पर विराजेगा? फिर अदोनियाह राजा क्यों बना है?' जब आप वहां राजा से बात कर रहे होंगे, मैं अंदर आऊंगा और आपने जो कहा है उसकी पुष्टि करूंगा। इसलिए नाथन को पता है कि क्या हो रहा है और वह बतशेबा को उस खतरे के बारे में चेतावनी देता है जो अदोनियाह ने उसके और उसके बेटे दोनों के लिए किया था। वह श्लोक 11-14 में है।

उस समय के संदर्भ में, और शायद लगभग किसी भी समय में, सिंहासन हथियाने वालों के लिए अपनी स्थिति सुरक्षित करने के लिए सिंहासन के अन्य सभी संभावित दावेदारों की हत्या करना असामान्य नहीं है। तो वास्तव में बतशेबा और सुलैमान का जीवन खतरे में था। इसलिए नाथन ने बतशेबा को सलाह दी कि वह डेविड को बताए कि क्या हो रहा है। पद 11-14 में यह पहली बातचीत है।

दूसरा अध्याय 1, श्लोक 15-21 में बतशेबा और डेविड के बीच है। आप पढ़ते हैं: “तब बतशेबा वृद्ध राजा से मिलने उसके कमरे में गई, जहाँ शूनेमिन अभीशग उसकी सेवा कर रही थी। बतशेबा ने झुककर राजा के सामने घुटने टेक दिये। 'आपकी इच्छा क्या है?' राजा ने पूछा। उस ने उस से कहा, हे मेरे प्रभु, तू ने आप ही अपने दास से अपने परमेश्वर यहोवा की शपथ खाई है, कि तेरा पुत्र सुलैमान मेरे पीछे राजा होगा, और वह मेरी गद्दी पर विराजेगा। परन्तु अब अदोनियाह राजा हो गया है, और हे मेरे प्रभु राजा, तू इसके विषय में नहीं जानता। उस ने बहुत से गाय-बैल, पाले हुए बछड़े, और भेड़-बकरियां बलि कीं, और सब राजकुमारोंको अर्थात् एब्यातार याजक और सेनापति योआब को भी बुलाया है, परन्तु तेरे दास सुलैमान को नहीं बुलाया। हे मेरे प्रभु राजा, सारे इस्राएल की निगाहें तुझ पर लगी हैं, कि तुझ से सीखें कि मेरे प्रभु राजा के बाद उसकी गद्दी पर कौन बैठेगा। अन्यथा, जैसे ही मेरा स्वामी राजा अपने पुरखाओं के साथ सो जाएगा, मैं और मेरा पुत्र सुलैमान अपराधियों के समान समझे जाएंगे।” इसलिए वह दाऊद को उस शपथ की याद दिलाती है जो उसने खाई थी कि सुलैमान उसका उत्तराधिकारी होगा। फिर वह उसे अदोनियाह की क्रांति और विशेष रूप से जोआब और एब्याथर से मिले समर्थन के बारे में बताती है।

फिर तीसरी बातचीत कविता 22-27 में नाथन और डेविड के बीच है: “जब वह राजा से बात कर ही रही थी, नाथन भविष्यवक्ता आ गया। और उन्होंने राजा से कहा, 'नातान भविष्यवक्ता यहाँ है।' इसलिये वह राजा के साम्हने गया, और भूमि पर मुंह के बल गिरकर दण्डवत् किया। नातान ने कहा, हे मेरे प्रभु राजा, क्या तू ने घोषणा की है, कि अदोनियाह तेरे बाद राजा होगा, और वह तेरी गद्दी पर बैठेगा? आज वह नीचे गया और बड़ी संख्या में मवेशियों, पाले हुए बछड़ों और भेड़ों की बलि चढ़ायी। उसने राजा के सभी पुत्रों, सेनापतियों

और याजक एब्यातार को आमंत्रित किया है। अभी वे उसके साथ खा-पी रहे हैं और कह रहे हैं, "राजा अदोनियाह अमर रहें!" लेकिन उसने मुझे, आपके सेवक को, और सादोक याजक को, और यहोयादा के पुत्र बनायाह को, और आपके सेवक सुलैमान को आमंत्रित नहीं किया। क्या यह कुछ ऐसा है जो मेरे प्रभु राजा ने अपने सेवकों को यह बताए बिना किया है कि मेरे प्रभु राजा के बाद उनके सिंहासन पर कौन बैठेगा?" नाथन आता है, और मुझे लगता है कि इस मुद्दे को सुलझाने का यह एक कूटनीतिक तरीका है। दाऊद के साथ वह अदोनियाह के राजा घोषित किए जाने पर आश्चर्य व्यक्त करता है और, जैसा कि यह था, दाऊद से पूछता है कि क्या उसने इसे अधिकृत किया था।

अंतिम वार्तालाप पद 28-31 में दाऊद और बतशेबा के बीच है, और वहाँ इस मुद्दे का समाधान किया गया है, "तब राजा दाऊद ने कहा, 'बतशेबा को बुलाओ।' इसलिए वह राजा के सामने आई और उसके सामने खड़ी हुई। तब राजा ने शपथ ली: 'जैसा कि यहोवा के जीवन की शपथ, जिसने मुझे हर संकट से बचाया है, मैं आज निश्चित रूप से वही करूंगा जो मैंने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ खाकर तुझसे कहा था: तेरा पुत्र सुलैमान मेरे बाद राजा होगा, और वह मेरे स्थान पर मेरे सिंहासन पर बैठेगा।' तब बतशेबा ने अपना मुख भूमि पर झुकाया और राजा के सामने घुटने टेकते हुए कहा, 'मेरा प्रभु राजा दाऊद सदा जीवित रहे!' इसलिए दाऊद ने आगे चलकर सुलैमान को राजा के रूप में अभिषेक करने और उसके स्थान पर शासन करने का आदेश दिया, और ऐसा ही हुआ। सादोक और नातान ने उसका अभिषेक किया और तुरही बजाई और चिल्लाया, "राजा सुलैमान अमर रहें।" लोगों को इसकी घोषणा की गई।

जब इस बात की खबर दाऊद के द्वारा दिए गए मजबूत समर्थन के साथ अदोनियाह तक पहुँचती है, तो उसे एहसास होता है कि उसकी क्रांति बर्बाद हो चुकी है और वह वेदी पर जाकर शरण लेता है - संभवतः मोरिया पर्वत पर स्थित वेदी जहाँ एक तम्बू में सन्दूक रखा हुआ था। आप इसे पद 49 में पढ़ते हैं: "इस पर, अदोनियाह के सभी मेहमान घबराकर उठ खड़े हुए और तितर-बितर हो गए। लेकिन अदोनियाह सुलैमान के डर से गया और वेदी के सींगों को पकड़ लिया। तब सुलैमान को बताया गया, 'अदोनियाह

राजा सुलैमान से डरता है और वेदी के सींगों को पकड़ता है।' उसने कहा, 'राजा सुलैमान आज मुझसे शपथ ले कि वह अपने सेवक को तलवार से नहीं मारेगा।' सुलैमान ने उत्तर दिया, 'यदि वह खुद को एक योग्य व्यक्ति दिखाता है, तो उसके सिर का एक बाल भी ज़मीन पर नहीं गिरेगा; लेकिन अगर उसमें बुराई पाई जाती है, तो वह मर जाएगा।'"

दूसरे अध्याय के आरंभिक भाग में, पहले 4 छंदों में, आपको सुलैमान को दाऊद द्वारा दिए गए आरोप का एक भाग मिलता है जो मुझे लगता है कि काफी महत्वपूर्ण है, भले ही यह लंबा न हो। मुझे लगता है कि पहले चार छंदों को आप सच्चे वाचाबद्ध राजा का प्रोफ़ाइल कह सकते हैं: "जब दाऊद के मरने का समय निकट आया, तो उसने अपने बेटे सुलैमान को एक आदेश दिया। उसने कहा, 'मैं सारी पृथ्वी के मार्ग पर जाने वाला हूँ।' 'इसलिए दृढ़ हो जाओ, अपने आप को एक आदमी दिखाओ, और अपने परमेश्वर यहोवा की माँगों का पालन करो: उसके मार्गों पर चलो, और उसके नियमों और आज्ञाओं, उसके नियमों और आवश्यकताओं का पालन करो, जैसा कि मूसा के कानून में लिखा है, ताकि तुम जो कुछ भी करो और जहाँ भी जाओ, उसमें सफल हो, और यहोवा मेरे साथ अपना वादा पूरा करे: 'यदि तुम्हारे वंशज अपने जीवन का ध्यान रखें, और यदि वे अपने पूरे दिल और आत्मा से मेरे सामने ईमानदारी से चलते हैं, तो इस्राएल के सिंहासन पर तुम्हारा कोई न कोई व्यक्ति अवश्य होगा।'" मुझे लगता है कि आप इसे सच्चे वाचाबद्ध राजा का प्रोफ़ाइल कह सकते हैं। जब दाऊद ने सुलैमान को सरकार की बागडोर सौंपी, तो उसने सुलैमान को एक राजनीतिक वसीयतनामा दिया। यह इस बात का सार है कि उसकी ज़िम्मेदारियाँ क्या थीं, सच्चा वाचाबद्ध राजा कैसा होना चाहिए।

अब आइए इस्राएल के राजत्व की अवधारणा पर थोड़ा विचार करें। मैंने 1 शमूएल 8-12 में राजत्व के उदय पर पुराने नियम के इतिहास पाठ्यक्रम के संबंध में इस पर बात की है; लेकिन मुझे लगता है कि यह राजाओं की पुस्तक में भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस्राएल के पास राजत्व की एक अलग अवधारणा थी। अगर आपको याद हो जब इस्राएल ने शुरू में कनान में प्रवेश किया था, तो उनके पास कोई मानव राजा नहीं था। कोई शाही महल नहीं था; कोई शाही सिंहासन नहीं था, बल्कि एक तम्बू था जिसमें वाचा का संदूक रखा गया था।

वास्तव में, मुझे लगता है कि आप कहेंगे, वाचा का संदूक यहोवा का सिंहासन आसन था। वह संदूक के शीर्ष पर करूबों के बीच विराजमान है, जो उस समय तम्बू में रखा गया था। वास्तव में, संदूक यहोवा का सिंहासन आसन था जो इस्राएल का दिव्य राजा था वहाँ कोई शाही दरबार नहीं था, लेकिन वहाँ एक तम्बू था जिसमें एक सन्दूक था, और इस्राएल का राजा यहोवा था। उस व्यवस्था के पीछे विचार यह था कि लोग यहोवा का अनुसरण करने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने की व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेंगे; यानी, वाचा की आज्ञाओं और मूसा के कानून में बताई गई सभी बातों का पालन करना। धारणा यह थी कि वहाँ आपके पास ईश्वरीय राजा के रूप में यहोवा है। लोग व्यक्तिगत रूप से अपने वाचा दायित्वों के प्रति आज्ञाकारी होने की जिम्मेदारी खुद पर लेंगे, और इससे लोगों के बीच व्यवस्था और एकता और आम तौर पर समाज में व्यवस्था बनी रहेगी। उन्हें यहोवा के राजत्व को पहचानना था - यही उनकी जिम्मेदारी थी।

इस्राएल ने उस जिम्मेदारी को पूरा नहीं किया; उन्होंने वाचा के दायित्वों का पालन नहीं किया। वे उनसे दूर हो गए, और उन्होंने बार-बार यहोवा के राजत्व को अस्वीकार किया और दूसरे देवताओं की पूजा की। हम इसे न्यायियों की पुस्तक में बार-बार पाते हैं। और राष्ट्र ने उत्पीड़न, पश्चाताप और मुक्ति के न्यायियों के काल में उस चक्र से गुज़रा।

लेकिन जब आप शमूएल की पुस्तक में आते हैं, तो आप पाते हैं कि पुस्तक के शुरुआती अध्यायों में पलिशियों द्वारा उन पर अत्याचार किया जा रहा है और साथ ही अम्मोनियों द्वारा भी उन्हें धमकाया जा रहा है। अम्मोनियों का राजा नाहाश धमकी दे रहा है और वे अपनी स्थिति के लिए इस तथ्य को दोष देते हैं कि उनके पास उनके आस-पास के राष्ट्रों की तरह नेतृत्व करने और उनकी लड़ाई लड़ने के लिए कोई राजा नहीं है। 1 शमूएल अध्याय 8 में जब वे शमूएल के पास आते हैं, तो बुजुर्ग यही कहते हैं। इसलिए वे शमूएल से अनुरोध करते हैं कि वे उन्हें एक मानव राजा दें। शमूएल ने उनसे विरोध किया कि ऐसा करना यहोवा के राजत्व को अस्वीकार करना है, लेकिन प्रभु शमूएल से कहते हैं कि उन्हें एक राजा दें। इसलिए शमूएल प्रभु की आज्ञा का पालन करता है; वह उन्हें एक राजा देता है, लेकिन जब वह ऐसा करता है तो वह इस्राएल में राजा की भूमिका को सावधानीपूर्वक

परिभाषित करता है ताकि यह किसी भी तरह से यहोवा के निरंतर राजत्व से अलग न हो। इसलिए मुझे लगता है कि आप इस्राएल में जो कहते हैं वह यह है कि जब मानव राजत्व स्थापित हुआ, तो यह परमेश्वर की इच्छा थी कि वह मानव राजा को लोगों पर अपने शासन के साधन के रूप में उपयोग करे। यह प्रभु के विरुद्ध राजा नहीं है; यह उप-शासक के रूप में राजा है। यह एक राजा है जो अपने लोगों पर प्रभु के शासन का साधन है। इसलिए इस्राएल के प्रत्येक राजा के लिए यह महत्वपूर्ण था कि यहोवा सच्चा राजा है और मानव राजा परमेश्वर के कानून के अधीन है और उसे प्रभु के कानून की उन वाचा संबंधी आवश्यकताओं का पालन करने की आवश्यकता है। इसलिए दाऊद ने सुलैमान से कहा कि वह उसके मार्गों पर चले और मूसा के नियमों में लिखे उसके नियमों और आज्ञाओं का पालन करे।

अब , पहले राजा शाऊल के साथ यह जल्दी ही प्रकट होता है कि वह भविष्यवक्ता, विशेष रूप से शमूएल के वचन को सुनने के लिए तैयार नहीं है। वह प्रभु के कानून के अधीन होने के लिए तैयार नहीं है। कुछ घटनाएँ हैं: अध्याय 13 में शमूएल के आने से पहले बलिदान चढ़ाने का सवाल था। फिर अध्याय 15 में अमालेकियों को मिटाने के बारे में प्रभु के निर्देशों का पालन न करने का सवाल था। इसलिए शाऊल को राजा बनने से अस्वीकार कर दिया गया।

शाऊल के बाद दाऊद आता है, और दाऊद, जैसा कि हमने पिछले सप्ताह चर्चा की थी, वाचा के राजा के आदर्शों के सच्चे प्रतिनिधि के रूप में चित्रित किया गया है, लेकिन वह परिपूर्ण नहीं है। दाऊद के पास भी ऐसे समय थे जब उसने अपने हितों, अपने राजत्व को, उस सच्चे वाचा के राजा होने की अपनी जिम्मेदारियों से ऊपर रखा, और उसके जीवन में ऐसी घटनाएँ हैं जहाँ यह बिल्कुल स्पष्ट है। मुझे लगता है कि दाऊद के साथ मुद्दा यह है कि वह अपने तरीकों पर अड़ा नहीं रहा; वह हमेशा परमेश्वर के शासन में एक साधन बनने के लिए तत्परता से लौटा। जब वह उससे भटक गया तो उसने पश्चाताप किया। इसलिए मुझे नहीं लगता कि उसने कभी भी, आप कह सकते हैं, राजत्व की दृष्टि खो दी, जैसा कि परमेश्वर ने उसे बनाने का इरादा किया था। वह परिपूर्ण नहीं था, लेकिन उसने उस आदर्श

को बनाए रखा, और मुझे लगता है कि उसे इस्राएल में राजत्व की वास्तविक प्रकृति के बारे में स्पष्ट अंतर्दृष्टि थी। 1 राजा के अध्याय 2 में आप जो पाते हैं वह यह है कि अपनी मृत्युशैया पर वह इन आयतों में सुलैमान को वह अंतर्दृष्टि प्रेषित करता है, और आपको 1 इतिहास 29:10 और उसके बाद के कुछ अंश मिलते हैं।

1 इतिहास 29:10 और उसके बाद का भाग बहुत ही सुन्दर है। यह दाऊद से शुरू होता है; यहाँ संदर्भ अलग है, हालाँकि आप देखते हैं कि यह सुलैमान को राजा के रूप में स्वीकार करने से ठीक पहले आता है। यह 29:21 है। दाऊद की मृत्यु 29:26 में है। पद 10: “दाऊद ने सारी सभा के सामने यहोवा से प्रार्थना की, ‘हे यहोवा, हमारे पिता इस्राएल के परमेश्वर, अनादिकाल से अनन्तकाल तक तेरी स्तुति हो। हे यहोवा, महिमा, पराक्रम, वैभव, ऐश्वर्य और वैभव तेरा ही है, क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है। हे यहोवा, राज्य तेरा ही है ; तू सब के ऊपर प्रधान है। धन और प्रतिष्ठा तुझ से आती है; तू सब वस्तुओं का शासक है। तेरे हाथ में सब को बढ़ाने और बल देने की शक्ति और सामर्थ्य है। अब, हे हमारे परमेश्वर, हम तेरा धन्यवाद करते हैं, और तेरे महिमामय नाम की स्तुति करते हैं। परन्तु मैं कौन हूँ, और मेरी प्रजा कौन है, कि हम इतनी उदारता से दे सकें? सब कुछ तुझसे आता है, और हमने तुझे केवल वही दिया है जो तेरे हाथ से आता है। हम तेरे सामने परदेशी और अजनबी हैं, जैसे हमारे सभी पूर्वज थे। पृथ्वी पर हमारे दिन एक छाया की तरह हैं, बिना आशा के। हे हमारे परमेश्वर यहोवा, यह सब बहुतायत जो हमने तेरे पवित्र नाम के लिए एक मंदिर बनाने के लिए प्रदान की है, यह तेरे हाथ से है, और यह सब तेरा है। हे मेरे परमेश्वर, मैं जानता हूँ कि तू हृदय को परखता है और खराई से प्रसन्न होता है। ये सभी चीज़ें मैंने स्वेच्छा से और ईमानदारी के इरादे से दी हैं। और अब मैंने खुशी के साथ देखा है कि यहाँ मौजूद तेरे लोगों ने तुझे कितनी स्वेच्छा से दिया है। हे हमारे पूर्वजों इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, अपने लोगों के हृदय में यह इच्छा हमेशा बनाए रख, और उनके हृदय को अपने प्रति वफादार रख। और मेरे पुत्र सुलैमान को पूरे हृदय से समर्पित कर कि वह आपकी आज्ञाओं, आवश्यकताओं और विधियों का पालन करे और उस भव्य भवन को बनाने के लिए सब कुछ करे, जिसके लिए मैंने व्यवस्था की है।” तो मुझे लगता है

कि आप दाऊद की उस अवधारणा को समझ सकते हैं जो राजा के रूप में परमेश्वर के शासन, प्रभु के राजत्व के अधीन मानव राजा के शासन, और मानव राजा के लिए प्रभु को समर्पित हृदय रखने की आवश्यकता के बारे में है।

वह पद 19 में कहता है, “मेरे पुत्र सुलैमान को अपनी आज्ञाओं को मानने के लिए पूरे मन से समर्पित कर।” हम वापस उस स्थान पर जाते हैं जहाँ हम 1 राजा 2 में देख रहे हैं जहाँ दाऊद सुलैमान से कहता है, “अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन करना, उसके मार्गों पर चलना, उसकी विधियों, आज्ञाओं, व्यवस्थाओं और नियमों का पालन करना।” तो उन पहले 4 पदों में आपको दाऊद की यह राजनीतिक वसीयत मिल सकती है, आप कह सकते हैं, क्योंकि राजत्व दाऊद से सुलैमान को हस्तांतरित किया गया था।

अब आप यह सवाल पूछ सकते हैं कि इस्राएल में राजा कब अच्छा राजा होता है? मैं कहूँगा कि यह तभी होता है जब वह खुद को यहोवा के राजत्व के अधीन कर लेता है और खुद को यहोवा के राजत्व की सेवा में लगा देता है। वह ऐसा कैसे कर सकता है? वह ऐसा केवल परमेश्वर के नियम के अनुसार चलकर ही कर सकता है। मुझे लगता है कि आप इस बिंदु पर देख सकते हैं कि अंतिम विश्लेषण में केवल एक ही राजा है जो सच्चे राजा के लिए दाऊद की प्रोफ़ाइल के अनुरूप होगा और जो मसीह की ओर इशारा करता है। सुलैमान ऐसा करने वाला नहीं था, और दाऊद ने खुद ऐसा नहीं किया। अंततः, यह केवल तभी होगा जब परमेश्वर स्वयं आकर दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा, तब आपके पास कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो वाचा के राजत्व के आदर्शों को पूरा कर सकता है। इसलिए इस्राएल के सभी राजा आदर्श से कमतर हैं। उनमें से सभी, भले ही दाऊद और सुलैमान सूची में सबसे ऊपर हैं, आप उन्हें अच्छे राजाओं में से कह सकते हैं, लेकिन वे सभी आदर्श से कमतर हैं। ऐसा करने से वे उस व्यक्ति की ओर संकेत करते हैं जो अंततः आएगा और दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा और धार्मिकता और न्याय की परिपूर्णता और सम्पूर्णता से शासन करेगा, जैसा कि सच्चे वाचागत राजा के लिए अभिप्रेत था।

बस एक साइड कमेंट के रूप में आप कई बार सवाल पूछ सकते हैं: इस सामग्री की प्रासंगिकता क्या है? मैं यहाँ जिस चीज़ को प्राप्त करने की कोशिश कर रहा हूँ, वह यह

मुक्तिदायक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य है। जब आप इसे देखते हैं, जब आप संदर्भ में जो कुछ हो रहा है उसे देखते हैं, तो आप परमेश्वर के मुक्ति के कार्यक्रम को देखते हैं, और राजत्व की संस्था निश्चित रूप से मुक्ति के कार्यक्रम का उपयोग कर रही है। अंततः, मसीह राजा के रूप में आता है, और ये राजा उसी की ओर इशारा कर रहे हैं। लेकिन फिर आप थोड़ा और आगे जा सकते हैं: हमारे लिए इस्राएल के राजाओं की इस प्रोफ़ाइल का क्या महत्व है? शायद आप कह सकते हैं कि इस अर्थ में इस्राएल के राजाओं और हमारे बीच एक समानता है: जिस तरह इस्राएल के राजाओं को अपने शासन में यहोवा के राजत्व को प्रतिबिंबित करना था, उसी तरह हमें अपने जीवन में मसीह के राजत्व को अपने आस-पास की दुनिया में प्रतिबिंबित करना है। वह वही है जो हमारे जीवन पर शासन करने वाला है, और यह केवल तभी संभव है जब हम खुद को परमेश्वर के वचन के अधीन करते हैं जो शास्त्र की सभी आज्ञाओं की अपेक्षा करता है और आज्ञाकारिता का जीवन जीते हैं, तभी हम अपने जीवन में मसीह के उस राजत्व को प्रतिबिंबित कर सकते हैं और इसे अपने आस-पास के लोगों पर कई अलग-अलग तरीकों से प्रतिबिंबित कर सकते हैं। अब यह सिर्फ एक साइड कमेंट है।

आइए हम अपने पाठ पर वापस जाएं, जो अब अध्याय 2 के श्लोक 5-12 हैं। मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि जिस तरह इस्राएल के राजाओं को अपने शासन में यहोवा के राजत्व को प्रतिबिंबित करना था, उसी तरह हमें भी मसीह के राजत्व को अपने आस-पास की दुनिया में प्रतिबिंबित करना है, क्योंकि वह हमारे जीवन में शासन करता है। लेकिन यह हमारे लिए ही संभव है, जैसा कि प्राचीन इस्राएल के राजाओं के लिए था, जब हम खुद को उन सभी के अधीन करते हैं जो परमेश्वर के वचन हमसे अपेक्षा करते हैं। जब हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो हम अपने जीवन जीने के तरीके से अपने आस-पास के लोगों को भी कुछ हद तक प्रतिबिंबित कर सकते हैं। मैं कह रहा हूँ कि इसके अलावा, मुझे लगता है कि एक मुक्तिदायक, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य है जो बहुत महत्वपूर्ण है और आप एक निश्चित अर्थ में कह सकते हैं कि ये सभी राजा मसीह की ओर इशारा करते हैं, इस अर्थ में कि वे आदर्श से कम हैं। केवल मसीह ही आदर्श को पूरा करेगा, लेकिन मुझे

अभी भी लगता है कि इसमें एक सिद्धांत शामिल है कि मसीह का शासन यहोवा का शासन है जिसे उन राजाओं में प्रतिबिंबित किया जाना था। मसीह का नियम हमारे जीवन में प्रतिबिम्बित होना चाहिए।

मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि जब आप पुराने नियम में मसीह के पूर्वाभास को देखते हैं तो आपको प्राचीन इस्राएल में पद मिलते हैं जो उसकी ओर संकेत करते हैं। आपके पास भविष्यवक्ता, पुजारी और राजा हैं। व्यवस्थाविवरण 18 में हम पढ़ते हैं कि प्रभु मूसा जैसा भविष्यवक्ता खड़ा करेगा, और इसे नए नियम में उठाया गया है, अंततः मसीह के आने का संकेत देते हुए जो मूसा जैसा भविष्यवक्ता था। लेकिन वह मूसा से बड़ा है। तो निश्चित रूप से भविष्यवक्ताओं की पंक्ति मसीह की ओर संकेत करती है।

पुजारियों के साथ भी ऐसा ही है, बेशक, मसीह एक अलग व्यवस्था के पुजारी हैं। वह हारून की वंशावली से नहीं है, वह मेल्कीसेदेक के क्रम का पुजारी है, जिसका वंश हारून के ज़रिए नहीं है, लेकिन वह परमेश्वर के सामने हमारा प्रतिनिधित्व करने और मध्यस्थता करने में पुजारी का कार्य करता है। इसलिए मसीह उन सभी पदों को एक साथ रखता है: नबी, पुजारी और राजा। यहां हम सिर्फ उसी के बारे में बात कर रहे हैं।

मैं और मैं अध्याय 2 के श्लोक 5 से 12 पर शीघ्रता से कुछ टिप्पणियाँ करना चाहते हैं। उन श्लोकों में डेविड सुलैमान को तीन लोगों से निपटने का निर्देश देता है। वे योआब, बरजिल्लै और शिमी हैं। उन तीन लोगों में से, बर्जिल्लै को वफादारी के लिए पुरस्कृत किया जाना है जब उसने जरूरत के समय डेविड की मदद की, जब डेविड अबशालोम से भाग रहा था। परन्तु योआब और शिमी को दाऊद के विरुद्ध गंभीर अपराधों के लिये दण्ड दिया जाना है। मुझे लगता है कि हम कहेंगे कि डेविड ने सुलैमान को ये निर्देश व्यक्तिगत बदला लेने के लिए नहीं, बल्कि सुलैमान के राजत्व की चिंता के कारण दिए थे, कि यह अच्छी नींव पर शुरू होगा।

तो सबसे पहले, योआब के बारे में आपने पद 5 में पढ़ा, “अब आप स्वयं जानते हैं कि सरूयाह के पुत्र योआब ने मेरे साथ क्या किया - उसने इस्राएल की सेनाओं के दो सेनापतियों, नेर के पुत्र अब्नेर और येतेर के पुत्र अमासा के साथ क्या किया। उसने उन्हें मार

डाला, शांतिकाल में मानो युद्ध में उनका खून बहाया, और उस खून से उसकी कमर के चारों ओर बेल्ट और उसके पैरों पर सैंडल दाग दिए। अपनी बुद्धि के अनुसार उसके साथ व्यवहार करना, परन्तु उसके पके हुए सिर को शान्ति से अधोलोक में न जाने देना।” यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वह क्या कह रहा है। योआब ने इस्राएल की सेनाओं के दो कमांडरों, अब्नेर और अमासा को मार डाला था, और उसने ऐसा युद्ध के संदर्भ में नहीं किया था। उसने यह किया था; उसने सचमुच उनकी हत्या कर दी थी।

बाद में उसने दाऊद की आज्ञा के विरुद्ध अबशालोम को मार डाला। अबशालोम की क्रांति के बाद डेविड नहीं चाहता था कि अबशालोम मारा जाए, लेकिन योआब ने उसे मार डाला। अतः यहाँ दाऊद का निर्देश योआब का प्राण लेना है। यह हमें कठोर लग सकता है, लेकिन मुझे लगता है कि यह संख्या 35:30-34 में निहित है जो कहता है, “जो कोई किसी व्यक्ति को मारता है उसे केवल गवाहों की गवाही पर हत्यारे के रूप में मौत की सजा दी जाएगी। लेकिन केवल एक गवाह की गवाही पर किसी को मौत की सज़ा नहीं दी जाएगी। उस हत्यारे के प्राण के बदले में फिरौती न लेना जो मृत्यु के योग्य है। उसे अवश्य ही मौत की सज़ा दी जानी चाहिए। जो कोई शरण नगर में भाग गया है, उसके लिए फिरौती स्वीकार न करें और इसलिए उसे महायाजक की मृत्यु से पहले वापस जाने और अपनी भूमि पर रहने की अनुमति दें। जहाँ तुम हो उस भूमि को प्रदूषित मत करो। रक्तपात भूमि को प्रदूषित करता है, और जिस भूमि पर रक्त बहाया गया है उसका प्रायश्चित केवल खून बहाने वाले के रक्त के अलावा नहीं किया जा सकता है। जिस देश में तुम रहते हो, और जिस में मैं रहता हूँ उसे अशुद्ध मत करना, क्योंकि मैं यहोवा इस्राएलियोंके बीच में रहता हूँ। संख्याएँ हमें बताती हैं कि रक्तपात भूमि को प्रदूषित करता है।

वास्तव में, यदि आप आम तौर पर पुराने नियम में देखें, तो तीन चीजें हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि वे कनान भूमि को प्रदूषित करती हैं: 1) रक्तपात एक है, निर्दोष रक्त बहाना। जान लेना वैध और गैरकानूनी है। मैं गैरकानूनी तरीके से जान लेने की बात कर रहा हूँ। 2) यौन अनैतिकता दूसरी है। लैव्यव्यवस्था 18 को देखें; लैव्यव्यवस्था 18 का पूरा अध्याय गैरकानूनी यौन संबंधों और विकृतियों पर है, और यदि आप श्लोक 25 पर जाते हैं

तो आप पढ़ते हैं, "यहां तक कि भूमि भी अशुद्ध हो गई थी।" आयत 24 कहती है, "इनमें से किसी भी तरीके से अपने आप को अशुद्ध मत करो क्योंकि जिन राष्ट्रों को मैं तुमसे पहले निष्कासित करने जा रहा हूँ वे इसी प्रकार अशुद्ध हो गए हैं। यहाँ तक कि भूमि भी अशुद्ध हो गई; इसलिये मैं ने उसे उसके पाप का दण्ड दिया, और उस देश ने अपने रहनेवालोंको उगल दिया। पद 27, "क्योंकि ये सब काम उन लोगों ने किए जो उस देश में तुम से पहिले रहते थे, और देश अशुद्ध हो गया। और यदि तुम भूमि को अशुद्ध करोगे, तो वह तुम्हें वैसा ही उगल देगी जैसा उस ने उन जातियों को उगल दिया जो तुम से पहिले थीं।" इसलिए रक्तपात यौन अनैतिकता के साथ-साथ भूमि को भी प्रदूषित करता है।

तीसरा है मूर्तिपूजा. यिर्मयाह 3:9: "क्योंकि इस्राएल की अनैतिकता उसके लिए कोई मायने नहीं रखती थी, इसलिए उसने देश को अशुद्ध कर दिया और पत्थर और लकड़ी के साथ व्यभिचार किया। इतना सब कुछ होने पर भी उसकी विश्वासघाती बहन यहूदा पूरे मन से मेरे पास नहीं लौटी, परन्तु केवल दिखावा करके, यहोवा की यही वाणी है। उन्होंने भूमि को अशुद्ध किया और पत्थर और लकड़ी के साथ व्यभिचार किया, और यहजेकेल 36:17-18 भी कुछ ऐसा ही कहता है। तो यह कुछ हद तक विषयांतर है, लेकिन यहां मुद्दा यह है कि निर्दोष रक्त बहाए जाने से भूमि अशुद्ध हो जाएगी, और मुझे लगता है कि डेविड जो कह रहा है वह यह है कि योआब के रक्त-दोषी को संबोधित करने की आवश्यकता है क्योंकि यदि ऐसा नहीं होता तो यह सुलैमान के शासन को नुकसान पहुंचा सकता था।

मुझे लगता है कि आप 2 शमूएल 21 में दाऊद के समय के दौरान इसका एक उदाहरण देखते हैं। 2 शमूएल 21 में तीन साल तक अकाल पड़ा क्योंकि शाऊल ने गिबोनियों को उस संधि का उल्लंघन करते हुए मौत के घाट उतार दिया था जो यहोशू ने वादा किए गए देश में आने पर की थी। . गिबोनियों के साथ एक शांति संधि थी , और गिबोनियों के साथ उस शांति संधि का उल्लंघन किया गया था। गिबोनियों को इस तरह से मौत के घाट उतार दिया गया जो गैरकानूनी तरीके से मौत की सजा थी, और इसके परिणामस्वरूप तीन साल तक अकाल पड़ा। इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि योआब के

संबंध में इस आदेश में यही शामिल है ।

चलिए दस मिनट का ब्रेक लेते हैं.

जेफ ब्राउन द्वारा प्रतिलेखित  
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित  
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन  
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया